ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, *RNI:UPBIL04292,REG.No.:561/2013-14 Vol.-I, No.-1,* **PP-49-51**, *YEAR 2014*

बैराठः विराठ नगर : अन्वेषण

❑ डॉ0 प्रमिला सिंह*

जयपुर से लगभग 80 किलोमीटर की दूरी पर अपने प्राकृतिक वातावरण से आच्छादित विराट नगर स्थित है। जिसे आज हम जनभाषा में बैराठ ग्राम से भी पुकारते हैं। इसका प्राचीन नाम मत्स्य नगर था। जिसका उल्लेख ऋग्वेद, शतपथ, ब्राहमण् तथा मनुस्मृति में मिलता है। महाभारत में भी मत्स्य देश का वर्णन है। भारत के सांस्कृतिक इतिहास में मत्स्य देश की प्रमुख भूमिका रही है। महाभारत कालीन युग से वर्तमान समय तक जयपुर अलवर एवं भरतपुर जिलों के आस–पास का भू–भाग मत्स्य देश तथा विराट नगर को इसकी राजधानी के रूप में पहचाने जाने लगा।[1]

महाभारत के विराट पर्व के अनुसार इस स्थान पर पाण्डवों ने अज्ञातवास किया था। संस्कृत व पाली के प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों में मत्स्य देश का उल्लेख मिलता है। चीन के प्रसिद्ध धर्म यात्री व्हैनसांग सातवीं शताब्दी में विराट नगर भी आये थे तथा इस स्थल का विस्तार से उल्लेख उनके विवरण में मिलता है।

मत्स्य देश की प्राचीन संस्कृति की जानकारी उत्खनन कार्यों के माध्यम से प्राप्त की गई है। यहां पर प्रचुर संख्या में प्राचीन सिक्के भी उपलब्ध हुये हैं। प्राचीन स्मारक तथा प्रतिभाएं इस क्षेत्र की इन्द्रधनुषी संस्कृति को गौरव प्रदान करती है।

सभ्यता के उषाकाल में विराट नगर मानव गतिविधियों का एक प्रमुख केन्द्र रहा है। यहां से पाषाण युगीन मानव द्वारा निर्मित प्राचीन उपकरण उपलब्ध हुये हैं। अध्ययन के आधार पर इन्हें तीन अवस्थाओं में विभाजित किया गया है–

1. प्रारम्भिक पाषाण काल
2. मध्य पाषाण काल,
3. उत्तर पाषाण काल।

यहां मौर्यकालीन मिट्टी के पात्र अधिक मात्रा में उपलब्ध हुये है। यह पक्की मिट्टी की बने हैं। कुछ पक्की हुई मिट्टी की सीलनुमा मोहरे भी प्राप्त हुयी है, जिनमें ब्राह्मीलिपी का प्रयोग है। एक प्लेट पर तो ऐसा माना जाता है कि वह ''ल'' शब्द उत्कीर्ण किया गया है। इसी प्रकार से एक दूसरी प्लेट पर हाथ की अंगुलियों के निशान भी अंकित किये गये हैं।

मौर्यकालीन कुछ लोहे से निर्मित हथौड़ी, छेनी व फरसा आदि के नमूने भी उपलब्ध हुए है साथ ही लोहे का बना हुआ कैल्पस भी उपलब्ध है जो पत्थर को जोड़ने के काम आता है।

मेद ग्राम से 12 वीं शताब्दी की बुद्ध प्रतिमा भी प्राप्त हुई है। यह ध्यान मुद्रा में बनी है। उपरोक्त सभी सामग्री बैराठ संग्रहालय में आज भी सुरक्षित है।

सांस्कृतिक सम्पदा विराट नगर में सम्पन्न हुए उत्खनन कार्यों के परिणाम स्वरूप महाभारत, मौर्य तथा कुषाण काल में यहां पुष्पित पल्लवित संस्कृतियों की विस्तृत जानकारी उपलब्ध होती है। ज्ञात हुआ है कि प्राचीनकाल में यह स्थल लोह उद्योग का प्रमुख केन्द्र था। उत्खनन से प्राप्त पंच मार्क इन्डो ग्रीक सिक्के तथा विविध पुरावशेष प्रदेश की गौरवशाली सांस्कृतिक परम्परा के सशक्त साध्य हैं। बौद्ध बिहार एवं उपासना स्थल के अवशेष भी यहां प्रकाश में आये हैं। सम्राट अशोक के शिलालेखों की उपलब्धि इस क्षेत्र के महत्व को इंगित करती है।[2]

सिक्के विराट नगर से पंच मार्क्ड सिक्के प्रचुर संख्या में प्राप्त हुए हैं। ये भारत के प्राचीनतम सिक्के हैं। इन पर विविध प्रकार के चिन्ह अंकित हैं। यहाँ पर हुये उत्खनन काल के परिणाम–स्वरूप इन्डो ग्रीक सिक्के भी प्राप्त हुए हैं। इन सिक्कों पर युनानी तथा ब्राह्मी लिपियों में लेख अंकित है।

* अध्यक्ष, व्यावसायिक कला विभाग महात्मां गाधीं चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, जिला–सतना, म0प्र0

कुषाण इन्ड़ों ससैनियन तथा दिल्ली के सुल्तानों के सिक्के भी विराट नगर तथा आसपास के क्षेत्रों से उपलब्ध हुए है।

मुगलकाल में यहां टकसाल प्रचलित थी जिसमें अकबर, जहांगीर व अन्य मुगल बादशाह के सिक्के ढाले गये। इन सिक्कों पर चिन्ह अंकित हैं। उत्कीर्ण सुलिपी उच्च कोटी की है।

पन्च मार्क्ड चांदी के सिक्के मौर्यकालीन,
इन्ड़ों ग्रीक चांदी के सिक्के 200 ई0पू0 से 200 ई0
इब्राहिम लोदी तांबे के सिक्के 1517 ई0 से 1526 ई0
अकबर कालीन चांदी के सिक्के 1556 ई0 से 1605 ई0
जहांगीर कालीन चांदी के सिक्के 1605 ई0 से 1627 ई0

बीजक की पहाडियां: विराट नगर से बीजक की पहाडियां आदि–मानव के द्वारा अंकित शैल चित्रों की उपलब्धि मानी गई है। विजय कुमार जी के अनुसार यहां से उपलब्ध 80 शैल चित्र है। जो इन पहाड़ियों में दूर–दूर स्थित हैं। इन चित्रों से आदि मानव की कला एवं सभ्यता का पता लगता है।

उत्खनित पुरावशेष: अनुश्रुति के अनुसार बैराठ अथवा विराट नगर मत्स्य देश की राजधानी थी। राजा विराट द्वारा स्थापित इस स्थल में पाण्डवों ने अपना गुप्तवास का तेरह वर्ष व्यतीत किया था। यहां से प्राप्त दो अशोक कालीन अभिलेख एवं बौद्ध पुरावशेष के कारण यह स्थान प्रख्यात है। यहां का अशोक कालीन शिला लेख आज कलकत्ता संग्रहालक में सुरक्षित है।

बीजक की पहाड़ी के नाम से प्रसिद्ध इस पर्वत के समतल भू–भागों के उत्खनन के परिणामस्वरूप एक खुले वर्गाकार आंगन के चारो ओर कक्षों की दुहरी पंक्तियों से घिरा विहार ईंटों से निर्मित एक ऊंचा चबूतरा एवं मौर्यकालीन स्तूप का सवेष्टित एक गोलाकार मंदिर (8.23 मी0 व्यास) के अवशेष प्रकाश में आये।

भू–विन्यास की दृष्टि से विहार का पूर्वी भाग भलीभांति सुरक्षित है। इसमें छः सात कक्षों की दो कतारें दिखाई देती हैं। दूसरे भू–भाग में दीवारों एवं फर्श के अवशेष प्राप्त हुए हैं। स्तूप के कुछ अवशेष एवं मौर्यकालीन पालिस युक्त एक कटोरा एवं स्तूप के पाषाण निर्मित छत्र के टुकड़े भी मिलते हैं। स्तूप का वैष्टित गोलाकार मंदिर का निर्माण पलस्तर से अच्छादित ईंटों द्वारा किया गया था। इसमें 26 काष्ठ स्तम्भों को लगाने की व्यवस्था है।

देवालय के पूर्वी ओर स्थित प्रवेश द्वार दो काष्ठ स्तम्भों पर आधारित था। परवर्ती काल में स्तूप मंदिर को संवेष्टित करने एवं पूर्वाभिमुख द्वार पर उपासकों के एकत्रित होने हेतु स्थान प्रदान करने के लिए एक आयताकार चाहर–दीवारी का निर्माण किया गया था। इस देवालय की गणना भारत के प्राचीनतम मन्दिरों में होती है। यह मन्दिर पश्चिम भारत में शैलवृद गुफा मन्दिर के, वास्तु का एक आरम्भिक नमूना था।

मुगल गेट मुगल बादशाह के लिए बनाया गया यह विश्राम–स्थल स्थापत्य कला चित्रकला एवं अद्भुद शिल्पकला का अनुपम उदाहरण है। इसमें श्रीकृष्ण की विभिन्न मुद्राओं के चित्र, अकबर का चित्र तथा विभिन्न प्रकार के अलंकार चित्रित हुए हैं। अन्य स्थापत्य कला में नौ महला, पंचमहला, चौमहला के सुन्दर नमूने रहे हैं। ये नगर के उत्तर में स्थित है। समय–समय पर उत्खनन से महत्वपूर्ण उपलब्ध सामग्रियाँ प्राप्त हुयी हैं।

सन् 1864–65 में डॉ0 कनिघम, 1871–72 में डॉ0 कार्लाइल, 1909–10 में डॉ0 आर0 भण्डारकर, 1936 में डॉ0 दयाराम साहनी एवं 1963 में एन0आर0 बनर्जी द्वारा इस विराट नगर क्षेत्र की खुदाई एवं खोज की गई। कुछ अन्य विद्वानों द्वारा भी इस क्षेत्र पर शोध किया गया।[3]

इस प्रकार के शोधों से निम्न महत्वपूर्ण वस्तुऐं प्राप्त हुई, जो इस क्षेत्र की ऐतिहासिकता, पुरातात्विकता एवं सांस्कृतिक महत्ता को उजागर करती है।

!1! बैराठ शिला लेख अशोक इण्डो ग्रीक, !2! चांदी के सिक्के 8 पंचक मार्क एवं 28 इण्डोग्रीक, !3! कपड़े का टुकड़ा, पंचम मार्क के सिक्के बंधा हुआ 2300 वर्ष पुराना, !4! अशोक का छाता, !5! बौद्ध

मन्दिर का कलश, !6! अशोक स्तम्भ, दो अशोक स्तम्भ के अवशेष जो प्लास्टर युक्त टुकड़ों के रूप में !7! स्वर्ण मंजुषा, भगवान बुद्ध की अस्थियों सहित, !8! अशोक के पत्थर के प्याले का अवशेष, !9! पीसने की चक्की का टुकड़ा, !10! हाथीं दांत का कंगन, !11! मिट्टी से निर्मित कंगन हार आदि, !12! लोहे व ताबें के औजार, तीर, पत्ती, फिशप्लेट आदि, !13! नृत्य करती हुई यक्ष लड़की, !14! खुदी हुई या लिखी हुई ईंटें, !15! मिट्टी के बर्तन, !16! प्रागैतिहासिक कालीन 18 प्रस्तर के औजार, !17! कुषाणकालीन मूर्तियां प्राप्त हुई हैं।[4]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. श्रीवास्तव के0सी0, भारत की संस्कृति तथा कला, यूनाइटेड बुक डिपो प्रकाशन, 1994 ई0 पृष्ठ संख्या 70,71।
2. पर्यटक गाइड, राजस्थान पर्यटक, जयपुर पृष्ठ संख्या 2,3।
3. संग्रहालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार।
4. संग्रहालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार।